International Journal of Arts & Education Research

कबीर की काव्य संवेदना

परस राम पंचोली
व्याख्याता हिन्दी
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय , चेचट (कोटा)

मध्यकालीन कवियों में आज निर्विवाद रूप से 'कबीर' को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है।इसका मुख्य कारण धार्मिक रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों के प्रति उनका विद्रोही स्वर हैं।मध्यकाल में कबीर अकेले कवि है, जिन्होंने जीर्ण परम्पराओं का खुलकर विरोध किया है।पहले भी लोक– चेतना में कबीर की प्रतिष्ठा कम नहीं थी।नाभादास ने 'भक्तमाल' में उनका आदरपूर्वक स्मरण किया है।लोकोक्तियों में भी 'तुलसी' और 'सूर' के बाद कबीर का ही महत्त्व स्वीकार किया गया है।इस महत्त्व का कारण उनकी दृढ़ आस्था, निर्भीक व्यक्तित्व और अविचल भक्ति रही।आज 'कबीर'को जो महत्त्व दिया जा रहा है उसका कारण कुछ दूसरा हैं आज का कवि और साहित्यकार कबीर की मानसिकता को अपनी काव्य संवेदना के काफी निकट पाता है।कबीरदास ने अपने समय पर के जीवन–प्रवाह को खुले नेत्रों से देखा था।वे'कागद की लेखी'पर विश्वास नहीं करते थे।उन्होंने जो कुछ कहा उसके पीछे उनका अनुभव था।वे सहज जीवन के समर्थक थे और मनुष्य मात्र की एकता में विश्वास करते थे।उनकी कविता में उनकी आत्मा की यह तड़प स्पष्ट लक्षित होती है।

1. प्रस्तावना

कबीर संतमत के प्रवर्त्तक और संत काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है। विलक्षण के धनी और समाज – सुधारक संत कबीर हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनके समान सशक्त और क्रांतिकारी कोई अन्य कवि हिन्दी साहित्य में दिखलाई नही ं पडता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीरदास के काव्य और व्यक्तित्त्व का आकलन करते हुए लिखौ – कबीर की उक्तियों में कहीं – कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें प्रथम प्रश्नपत्र बडी प्रखर थी, इसमें संदेह नही ं। कबीर की विलक्षण प्रतिभा पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – हिन्दी साहित्य के हजार वर्षो के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्त्व लेकर लेखक उत्पन्न नही ं हुआ। भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। उनके संत रूप के साथ ही उनका कविरूप बराबर चलता रहता है।

कबीर की जन्मतिथि के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित है, पर अधिक मान्य मत – डॉ. श्यामसुन्दर दास और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। इन विद्वानों ने कबीर का जन्म सम्वत् 1456 वि. (सन्1389 ई.) माना है। इनके जन्म के सम्बध में कहा जाता है कि कबीर काशी की एक ब्राह्मणी विधवा की सन्तान थे।

समाज के डर से ब्राह्मणों ने अपने नवजात पुत्र को एक तालाग के किनारे छोड दिया था, जो नीरू जुलाहे और उसकी पत्नी नीमा को जलाशय के पास प्राप्त हुआ। विद्वानों के मतानुसार कबीर का अवसान मगहर में सम्वत् 1575 वि.(सन् 1518 ई.) में है

कबीर की जितनी भी रचनाएँ मिलती हैं उनकें शिष्यों ने इन्हें बीजक नामक ग्रन्थ में संकलित किया है। इसी बीजक के तीन भाग हैं – साख, शबर और रमैनी । साखी में संग्रहित साखियों की संख्या 809 है। सबद के अन्तर्गत 350 पद संकलित है। साखी शब्द का प्रयोग कबीर ने संसार की समस्याओं को सुलझाने के लिए किया है। सबद कबीर के गेय पद है। रमैनी के ईश्वर सम्बन्धी, शरीर एवं आत्मा उद्धार सम्बन्धी विचारों का संकलन है। कबीर के निर्गुण भक्ति मार्ग के अनुयायी थे और वैष्णव भक्त थे। रामानंद से शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण कबीर के ह्रदय में वैष्णवों के लिए अत्यधिक आदर था। कबीर ने धार्मिक पाखण्डों, सामाजिक कुरीतियों, अनाचारों, पारस्परिक विरोधों आदि को दूर करने का सराहनीय कार्य किया है। कबीर की भाषा में सरलता एवं सादगी है, उसमें नूतन प्रकाश देने की अद्भुत शक्ति है। उनका साहित्य जन–जीवन को उन्नत बनाने वाला, मानवतावाद का पोषाक, विश्व –बन्धुत्व की भावना जाग्रत करने वाला है। इसी कारण हिन्दी सन्त काव्यधारा में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

2. कबीर काव्य की विशेषताएँ

भारतीय इतिहास में एक महत्वप ूर्ण घटना के रूप में भक्ति आन्दोलन को देखा–परखा जाता है। यह इतिहास की महत्वपूर्ण घटना निम्नलिखित विशेषताओं के कारण है :–

2.1 जनता की एकता की स्वीकृति

भक्ति आन्दोलन ने अपने धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार किया। यह स्वीकृति वैचारिक और व्यावहारिक दोनों आधारों पर है। रामानन्द की शिष्य परम्परा में कबीर, रैदास, दादू, तुकाराम तथा तुलसी समान रूप से स्वीकृत हैं, तथा मीरा ने अपने गुरू के रूप में रैदास को स्वीकार किया यह भी एक मिसाल है। दूसरे कबीर कहते हैं– ''ना मैं हिन्दू ना मुसलमान'' और तुलसी जब भील–भीलनी, किरात जैसी जंगली जातियों को राम के द्वारा स्वीकार और सम्मानित करवाते हैं तो इसी एकता की बात करते हैं।

2.2. ईश्वर के समक्ष सबकी समानता

प्रथम प्रश्नपत्र भक्ति आन्दोलन का यह एक ऐसा वैचारिक आधार है जिसके माध्यम से वह ऊँच–नीच एवं जाति और वर्ण–भेद के आधार पर विभाजित मानवता की समानता को एक नैतिक और मजबूत आधार प्रदान करते हैं। समाज में व्याप्त असमानताओं का आधार भी ईश्वर की भक्ति को बनाया गया था– भक्ति संतों ने उन्हीं के हथियारों से उन पर वार किया और कहा कि– 'ब्रह्म' के अंश सभी

जीव हैं तो फिर यह विषमता क्यों? कि किसी को ईश्वर उपासना का सम्पूर्ण अधिकार और किसी को बिल्कुल नहीं, इतना ही नहीं इसी आधार पर समाज को रहन–सहन, खान–पान, छुआ–छूत एवं आर्थिक विषमताओं से विभाजित किया गया था। भक्तों ने चाहे वे निर्गुण हा ं चाहे सगुण सभी ने ईश्वर के समक्ष मानव मात्र की समानता को एक स्वर से स्वीकार किया।

2.3. जाति–प्रथा का विरोध

'जाति प्रथा' समाज की एक ऐसी बुराई थी जिसके चलते समाज के एक बड़े वर्ग को मनुष्यत्व के बाहर का दर्जा मिला हुआ था। 'अछूत', 'शूद्र', 'अन्त्यज', 'निम्नतम' श्रेणी के मनुष्यों का ऐसा समूह था जिसे मनुष्यत्व की मूलभूत पहचान भी प्राप्त नहीं थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ग में भी जातिगत श्रेष्ठता और सामाजिक व्यवस्था में उच्च श्रेणी के लिए संघर्ष होते रहते थे। भक्ति संतों ने मनुष्यता के इस अभिशाप से मुक्ति की लड़ाई पूरी ताकत से लड़ी। कबीर जब ''ना हिन्दू ना मुसलमान'' की बात करते हा ं या किसी जाति विशेष के विशिष्ट अधिकारों पर चोट करते हों जो उन्हें जातिगत आधार पर मिले हों तो वे वास्तव में जाति प्रथा की इसी वैचारिक धरातल को तोड़ना चाहते हैं। 'जाति' विशेष का विरोध या जाति को खत्म करने की बात नही ं की गई, बल्कि 'जाति' और 'धर्म' के तालमेल से उत्पन्न मानवीय विषमताओं और ह्रसमान जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए जाति के आधार मिले विशेषाधिकारों को खत्म करने की बात भक्ति आन्दोलन ने उठाई।

जाति प्रथा के आधार पर ईश्वर की उपासना का जो विशेष अधिकार ऊंची जाति वालों ने अपने पास रख रखा था और पुरोहित तथा क्षत्रियों की साँठ–गाँठ के आधार पर जिसे बलपूर्वक मनवाया जाता था। उसे तोड़ने का अथक प्रयास भी भक्ति आन्दोलन ने किया और कहा कि ईश्वर से तादात्म्य के लिए मनुष्य के सद्गुण – प्रेम, सहिष्णुता, पवित्र ह्रदय, सादा–सरल जीवन और ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास आवश्यक है न कि उसकी ऊँची जाति या ऊँचा सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक आधार।

2.4. धर्मनिरपेक्षता

धर्मनिरपेक्षता का मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति किसी धर्म–विशेष से कोई सम्बन्ध न रखे। बल्कि इसका अर्थ यह है कि अपने धर्म पर निष्ठा रखते ह ुए भी व्यक्ति दूसरे धर्मों का सम्मान करे तथा अपनी धार्मिक निष्ठा को दूसरे धर्मों में निष्ठा रखने वालों से जुड़ने में बाधा न बने। धर्मनिरपेक्षता एक जीवन मूल्य है जिसमें सहिष्णुता का गुण समाहित है। वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय तथा धर्मगत बन्धनों की अवहेलना करते हुए मनुष्य मात्र को ईश्वरोपासना का समान अधिकारी घोषित भक्ति आन्दोलन ने एक ऐसी धर्मनिरपेक्ष विचारधारा को जन्म दिया जो उस समय तो क्रांतिकारी थी ही आज भी इस विचारधारा को भारतीय समाज व्यावहारिक स्तर पर नहीं अपना पाया है।

भक्ति आन्दोलन के सभी सूत्रधारों में यह जीवन–मूल्य कमोवेश पाया जाता है। कबीर ने तो मानो इस विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठा रखा था। वे जानते थे कि इसे पाना आसान नहीं है, नहीं होगा तभी उन्होंने शर्त रखी जो अपना 'सर' काटकर रखने की क्षमता रखता हो या अपना उन्होंने फूँकने की क्षमता रखता हो वही कबीर की इस धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के साथ चल सकता है।

कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ।

जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ।।

जायसी इस विचारधारा को साहित्यिक स्तर पर अभिव्यक्त करते हैं। अपने मजहब के प्रति ईमानदारी रखते हुए भी उन्होंने दूसरे धर्ममतों को आदर दिया और जिसे मनुष्यता का सामान्य हृदय कहते हैं, या जिसे मनुष्यत्व की सामान्य भूमि कहते हैं, उस जमीन पर, जिससे भी मिलें, मनुष्य के नाते मिलें, बिना किसी भेदभाव के।

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में पहली बार अंत्यजों और पीड़ित–शोषित वर्गों ने अपने संत दिए और इन संतों ने प्रथम बार साहसपूर्वक सम्पूर्ण आस्था और विश्वास से धर्म–जाति और वर्ण–सम्प्रदायगत बन्धनों को तोड़ते हुए मानव धर्म तथा मानव संस्कृति का गान गाया।

2.5. सामाजिक उत्पीड़न और अंधविश्वासों का विरोध

भक्ति आन्दोलन ने एक लम्बी लड़ाई–अपने प्रारंभ से अंत तक–लड़ी वह थी, सामाजिक उत्पीड़न और जन सामान्य में व्याप्त अंधविश्वासों के विरुद्ध। कबीर इस युद्ध के उद्घोषक थे। उन्होंने इसे स्वयं की स्वयं को दी हुई चुनौती के रूप में स्वीकार किया और अपने तरकश के सभी तीर चलाए, तुक्का नहीं लगाया। कहीं–कहीं तो ऐसा लगता है कि कबीर अकेले खड़े हैं सामने चुनौती झेलने वाला कोई नहीं पर लड़ाई किसी व्यक्ति या शासक के विरुद्ध नहीं थी। लड़ाई थी उस गलीच 'विचारधारा' और 'सोच' के विरुद्ध जिसके आधार पर सदियों से मानवता का शोषण किया जा रहा था उसे उत्पीड़ित किया जा रहा था और मनुष्य जिसे अपनी नियति मानकर जी रहा था। कबीर ने कहा कि ''यह हमारी नियति नही ं, हमारा शोषण है, मानवता के प्रति अभिशाप है, किसी धर्म में इसका कोई आधार नहीं है।'' नियति और धर्म के नाम पर थोपे गए अंधविश्वासों को उन्होंने धर्म और ईश्वर के आधार पर ही खण्डित किया और ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित किया। इसी कारण उन्होंने सच्चे गुरू का महत्व प्रतिपादित किया – ''आगे थे सतगुर मिल्या, दीया दीपक हाथ।''

सूर और तुलसी ने भी सामाजिक उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाई है। तुलसी ने कई जगह तत्कालीन अर्थव्यवस्था का चित्र अंकित किया है तथा सामाजिक जीवन की विषमताओं को रेखांकित किया है। लगता है तुलसी स्वयं सामाजिक रूप से उत्पीड़ित रहे हैं। यह पंक्तियाँ इसका प्रमाण हैं।

धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जुलहा कहौ कोऊ,

काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगारिन सोऊ।

तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहो कछु कोऊ,

माँग के खइबौ, मसीत को सोइबो, लेबे को एक न देबे को दोऊ।

या फिर सामाजिक जीवन का यह हृदय विदारक दृश्य :

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख,

बलि, बनिक को वाणिज न, चाकर को चाकरी।

जीविका–विहीन लोग, सीद्यमान–सोच बस

कहैं एक–एकन सौ, कहाँ जाइ, का करी।।

3. निष्कर्ष

कबीर की महत्ता वहाँ साबित होती है जब वे अपने काव्य का लक्ष्य सामाजिक चेतना तथा हिन्दू मुस्लिम एकता को बना कर समाज में नई क्रांति का शंखनाद करते हैं। इस क्षेत्र में उनके व्यक्तित्व में और भी निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता को बल मिला है। रामचन्द्र तिवारी जी ने इसे और स्पष्ट करते हुए लिखा है – "उनकी कविता में उनकी आत्मा की यह तड़प स्पष्ट लक्षित होती है। आधुनिक शब्दावली का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि कबीर की कविता उनके सहज जीवन–बोध और तत्कालीन समाजव्यापी मिथ्याचार के बीच उत्पन्न द्वन्द्व एवं तनाव की कविता है। कबीर की कविता में लक्षित होने वाला यह तनाव ही वह बिन्दु है, जहाँ आज का कवि अपने को कबीर के साथ खड़ा पाता है।" एक कवि की सफलता यही है कि हर व्यक्ति उसकी रचनाओं के इर्द–गिर्द ही खुद को महसूस करता है। इस कवि की निर्भीकता भरी ललकार ही इसकी पहचान है, जो युगों–युगों तक अन्यत्र दुर्लभ रही है। निसंदेह ये बात सही हैं की कबीर आज के विद्रोही पीढ़ी को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं , कबीर जैसा प्रखर व्यक्तित्व वाला फक्कड़ , मस्त मौला , सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात करने वाला कवि मध्यकाल में कोई नहीं हुआ । यदि ये कहे कबीर की तरह कहने का सहस आज के कवि को भी नहीं हैं तो ये बड़ी बात न होगी द्य

आधार ग्रन्थ :–

- आधुनिक भाव–बोध की संज्ञा : अमृत राय

- कबीर मीमांसा : राम चंद्र तिवारी
- आधुनिक और हिंदी साहित्य : इंद्रनाथ मदान
- नई कविता : नंदा दुलारे वाजपेयी
- नए साहित्य का सौंदर्य दृ शास्त्र : गजानन माधव मुक्तिबोध
- कबीर ग्रंथावली : डॉ. श्याम सुन्दर दास
- द्विवेदी, आचार्य हजारीप्रसाद : कबीर, पृ० 144
- चतुर्वेदी, डॉ० रामस्वरूप : हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ० 31
- तिवारी, डॉ० रामचन्द्र : 'कबीर मीमांसा', पृ० 177
- तिवारी, डॉ० रामचन्द्र : 'कबीर मीमांसा', पृ० 178
- तिवारी, डॉ० पारसनाथ : 'कबीर ग्रंथावली', पृ० 160